शहर में बनेगा लड़ाकू विमान तेजस का पायलट पैराशूट

जीआईएल की इकाई आयुध पैराशूट निर्माणी ने तैयार किया प्रोटोटाइप, एडीआरडीई को भेजा

अमित अवस्थी

कानपुर। ग्लाइडर्स इंडिया लिमिटेड (जीआईएल) की इकाई आयुध पैराशूट निर्माणी ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर अभियान में लंबी छलांग लगाई है। लड़ाकू विमान तेजस के पायलट पैराशूट का प्रोटोटाइप तैयार कर लिया गया है। एरियल डिलीवरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (एडीआरडीई) को प्रोटोटाइप भेज दिया गया है। अब विमान में इसे लगाकर अलग-अलग ट्रायल शुरू किए जाएंगे।

खास खबर

अभी तक पायलट पैराशूट अमेरिका से आयात किए जाते थे। वहीं, हावर क्राफ्ट की टेस्टिंग क्लीयरेंस भी कंपनी को मिल गई है। पहली बार देश में हावर क्राफ्ट बनाए जा सकेंगे। कंपनी क्राफ्ट का बेस सिस्टम तैयार करेगी। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत कंपनी में अभी सुखोई, हॉक, मिराज, जगुआर, तेजस, मिग-21, मिग-29 लड़ाकू विमानों के ब्रेक पैराशूट बनते हैं।

अब तेजस विमान का पायलट पैराशूट बनाया जाएगा। पायलट पैराशूट का इस्तेमाल किसी आपात स्थिति में किया जाता है जिसे सीट इंजेक्शन कहा जाता है। जरूरत पड़ने पर पायलट इसमें लगी बटन को दबाता है और सीट के साथ ऊपर निकल जाता है। इस सीट पर खास पैराशूट लगा होता है जो खुल जाता है और पायलट सुरक्षित नीचे उतर आता है।

बताया गया कि इसकी कैनोपी बहुरंगी होगी। इस पैराशूट की छतरी में इस्तेमाल किया जाने वाला मूल कपड़ा नायलॉन 66 प्रकार का है जो अग्निरोधी होता है। इस कपड़े को विशेष तौर पर बनाया जाता है। इसका भार करीब 13-14 किलो होगा। 10 साल इसकी लाइफ होती है। इसका एक बार उपयोग किया जाता है। ड्रॉप ऊंचाई 150 मीटर एजीएल (न्यूनतम)/7620 मीटर एएमएसएल (अधिकतम), उतरने की दर 16-17 फीट/सेकेंड, कैनोपी क्षेत्र 89 वर्ग मीटर है। हालांकि ट्रायलों के बाद डिजाइन में बदलाव किया जा सकता है।

पायलट पैराशूट।

कुछ महीनों में होंगे पायलट पैराशूट के ट्रायल

तेजस लड़ाकू विमान का पायलट पैराशूट का प्रोटोटाइप तैयार कर लिया गया है। इसे 14 जनवरी 2025 को एरियल डिलीवरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (एडीआरडीई) को भेजा गया है। अगले कुछ महीनों में इसके फील्ड ट्रायल शुरू किए जाएंगे। अलग-अलग ट्रायल किए जाएंगे। हावर क्राफ्ट के बेस सिस्टम को बनाने की भी क्लीयरेंस मिल गई है। पहली बार देश में इसका उत्पादन शुरू हो सकेगा। ये दोनों उपलब्धियां मील का पत्थर होंगी। -एमसी बालासुब्रमणियम, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) जीआईएल।

नेवी और कोस्ट गार्ड बनेगी आत्मनिर्भर

बताया गया कि हावर क्राफ्ट बनाने के लिए जीआईएल, इंडियन कोस्ट गार्ड, इंडियन रबर मैन्यूफैक्चरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट और इंडियन रजिस्टर ऑफ शिपिंग की टीम बनाई गई है। जीआईएल की इकाई आयुध पैराशूट निर्माणी में हावर क्राफ्ट का बेस सिस्टम तैयार किया जाएगा। क्राफ्ट का बेस रबर का बना होता है। हावर क्राफ्ट पानी, जमीन, कीचड़ और घास पर चलने में सक्षम होता है। समुद्र या विशेष ऑपरेशन में हावर क्राफ्ट मददगार साबित होते हैं। अभी तक हॉवर क्राफ्ट विदेश से आयात किए जाते थे। वित्तीय वर्ष 2025-26 में इसका उत्पादन शुरू हो सकेगा।

हावर क्राफ्ट की टेस्टिंग क्लीयरेंस भी मिली, पहली बार शुरू होगा देश में उत्पादन

हावर क्राफ्ट।